अपनी बात

अविरल हिंदी पाठमाला की शिक्षक दर्शिकाएँ आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। आशा है ये शिक्षक दर्शिकाएँ पाठ्यपुस्तक के शिक्षण कार्य में अत्यंत सहायक सिद्ध होंगी और मूल्यांकन की प्रक्रिया को रोचक बनाने में भी मदद करेंगी। पाठ पढ़ाने से पहले उसमें आए पात्रों या विचारों के बारे में बच्चों से चर्चा करें। पाठ में आए मूल्यों और सद्गुणों का विकास भी छोटी-छोटी कहानियों और उससे मिलने वाली शिक्षा के द्वारा भी करवाया जा सकता है।

इन शिक्षक दर्शिकाओं में सभी प्रश्नों के उत्तर, व्याकरण संबंधी अभ्यास के हलों के साथ-साथ इस बात पर भी बल दिया गया है कि शिक्षक पाठों में अंतर्निहित मानवीय मूल्यों और उससे मिलने वाले संदेश की भी कक्षा में चर्चा करें ताकि विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो और वे सकारात्मक प्रवृत्ति के धारक बन सकें। पाठों के माध्यम से भाषा के सृजन और वैचारिक पक्ष पर भी बल दिया गया है जिससे बच्चा प्रारंभ से ही अपनी बात अपनी तरह से कहने और लिखने के लिए स्वतंत्र हो।

अभ्यास कार्य के अंतर्गत पाठ्यपुस्तक में आए सभी प्रश्नों के उत्तर तो दिए ही गए हैं, कुछ पाठों में 'सोच-समझ की बात' और 'कुछ करने की बात' के अंतर्गत केवल शिक्षण संकेत दिए गए हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे इसे अपनी कल्पनाशक्ति द्वारा स्वयं हल करने का प्रयास करेंगे।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि ये शिक्षक दर्शिकाएँ भाषा सिखाने की दृष्टि से शिक्षकों के लिए सहायक सिद्ध होंगी तथा विद्यार्थियों को सभी भाषा कौशलों की संप्राप्ति कराने में मद्द करेंगी। आपकी प्रतिक्रियाओं और सुझावों का सदैव स्वागत है।

प्रकाशक

विषय-सूची

इकाई-1 : हँसते-मुसकराते **3-12**

1. झटपट खाओ
2. निश्चय 4
3. बदल गई विचारधारा 6
   * अनोखा ठग 9
4. खिलौनेवाला
5. उल्लू की अदालत 11
   * मुल्ला नसरुद्दीन 12

इकाई-2 : अनोखा संसार **13-23**

6. जापान
7. दो चिड़ियाँ 15
8. प्लास्टिक प्रदूषण 17
   * कर लो पर्यावरण सुधार 19
9. जादुई गुड्डा
   * सुंदरी और दानव 21
10. फूल और काँटा 22

इकाई-3 : सूझबूझ **23-36**

11. सीढ़ीदार खेत
    * पेड़ क्या हैं 26
12. मियाँ गुमसुम और बत्तोरानी
13. न्यायमंत्री 27
14. दोहे 29
15. अनु की डायरी के पन्ने 31
16. लालबहादुर शास्त्री 33

इकाई-1 : हँसते-मुसकराते

1. झटपट खाओ

कविता का प्रारंभ–बच्चों को बताएँ कि इस कविता में कवि ने सूर्य, धरती, पशु-पक्षी का मानव के साथ अटूट संबंध बताया है। जब सूर्य की किरणें धरती पर पड़ती हैं तो हरी घास पनपती है। उस घास को गाय खाती है और गाय का दूध हम पीते हैं तथा उससे बनी अनेक चीज़ें जैसे–दही, मक्खन, घी इत्यादि खाकर हम तंदुरुस्त होते हैं। कविता पढ़ाने से पूर्व बच्चों से पूछें कि सूर्य से हमें क्या-क्या मिलता है? सूर्य हमारे भोजन से किस प्रकार जुड़ा है? कल्पना करो कि यदि सूर्य न होता तो क्या हमें सब्ज़ियाँ, फल आदि मिलते?

अभ्यास कार्य

कविता की बात

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

   (क) सूरज ने धरती पर धूप की किरण को भेजा।

   (ख) दूब को धरती ने साथ खेलते हुए उगा दिया।

   (ग) मक्खन देखकर कवि का मन उसको तुरंत खाने के लिए कर रहा था।

   (घ) माँ ने कहा कि तुम मक्खन खाकर हाथी की तरह तगड़े हो जाओ।

   (ङ) कवि ने माँ से सूँड़ लाने के लिए इसलिए कहा क्योंकि माँ ने उससे हाथी की तरह तगड़ा होने की बात कही थी।

2. (क) हिला-हिला मुँह → उसको खाया।

   (ख) झटपट भैया → इसको खाओ।

   (ग) खूब बिलोकर → मक्खन पाया।

   (घ) सूँड़ कहीं से → तो ले आओ।

3. (क) दूब उगी तो देख गया ने
   हिला-हिला मुँह उसको खाया।

   (ख) दूध मिला तो दादी माँ ने
   जामन देकर उसे जमाया।

   (ग) पर बोली माँ इसको खाकर
   हाथी से तगड़े हो जाओ।

भाषा की बात

1.

धूप	**दूब**	**भैया**	**मन**
सूप	खूब	नैया	तन
कूप	ऊब	मैया	धन
साथ	**उगा**	**गाय**	**खाया**
नाथ	चुगा	चाय	पाया
हाथ	सुगा	धाय	भाया

2.

माँ	जननी	अंबा	माता	(निशा)
धरती	(इंदु)	धरा	भूमि	पृथ्वी
सूरज	रवि	(शशि)	प्रभाकर	भानु
हाथी	गज	कुंजर	(केसरी)	हस्ती
किरण	अंशु	कर	मरीचि	(राकेश)

सोच-समझ की बात

1. संतुलित आहार अर्थात् जिसमें भोजन के पौष्टिक तत्व हों। दूध एक ऐसा संतुलित आहार है जिसमें प्रोटीन, कैल्शियम और अनेक विटामिन हैं जो हमारे दाँतों, हड्डियों तथा शरीर व बुद्धि के विकास के लिए आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त दूध में फास्फोरस, मैग्नीशियम, आयोडीन व कई खनिज, वसा तथा ऊर्जा भी होती है।
2. बच्चों को दूब के बारे में जानकारी दें।

कुछ करने की बात

1. बच्चे स्वयं अपने घर में या आस-पास के बगीचे में जाकर देखें कि वहाँ कौन-सी दूब लगी है।
2. बच्चे स्वयं करके देखें।

2. निश्चय

कहानी का प्रारंभ–बच्चों को बताएँ कि यह कहानी जातक कथा पर आधारित है। उन्हें बोधिसत्त्व के बारे में बताएँ। कहें–राजा या नेता के अच्छे-बुरे कर्मों का प्रभाव उसकी प्रजा पर अवश्य पड़ता है। पूछें–ब्रह्मदत्त कैसे राजा थे? ब्रह्मदत्त किसके आश्रम में पहुँचे?

अभ्यास कार्य

कहानी की बात

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) राजा ब्रह्मदत्त को ऐसे व्यक्ति की तलाश थी जो उन्हें उनके अवगुणों से परिचित करा सके।

(ख) महात्मा बोधिसत्त्व ने फलों के मीठा होने का कारण राजा का धर्म तथा न्याय के अनुसार शासन करना बताया।

(ग) राजा ब्रह्मदत्त ने बोधिसत्त्व के कथनों को परखने के लिए अधर्म तथा अन्यायपूर्वक शासन करना प्रारंभ कर दिया।

(घ) बोधिसत्त्व ने राजा ब्रह्मदत्त से कहा कि नदी पार करते समय गायों के झुंड में यदि आगे चलनेवाली गाय अपना मार्ग बदल ले तो पीछे चलनेवाली गायें भी अपना मार्ग बदल लेती हैं। इसी प्रकार राजा गलत आचरण करे और अधर्म को अपनाए तो प्रजा भी उसी रास्ते पर चलने लगती है।

2. (क) राजा ब्रह्मदत्त कैसे राजा थे?

(ख) बोधिसत्त्व ने राजा को खाने के लिए क्या दिया?

(ग) राजा ब्रह्मदत्त के व्यवहार से सभी लोग क्यों खुश थे?

3.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**	**भाववाचक संज्ञा**
बोधिसत्त्व	जंगल	भूख
हिमालय	राजा	मधुरता
ब्रह्मदत्त	फल	प्रसन्नता
वाराणसी	गाय	प्यास

4.

(र)	राजा	राजधानी	राज	रजनी
(र्)	मार्ग	अधर्म	तात्पर्य	पर्व
(्र)	प्रांत	प्रभाव	प्रणाम	ब्रह्मदत्त
(्र)	मेट्रो	राष्ट्र	ड्रम	ट्रक

5. जिसे न्याय प्रिय हो – न्यायप्रिय

जो दूर की सोचे – दूरदर्शी

जानने की इच्छा – जिज्ञासा

जिसके हृदय में दया हो – दयालु

6. उत्तर
- जबाव – बच्चों ने प्रश्नों के **उत्तर** दिए।
- एक दिशा – रामलाल अभी-अभी **उत्तर** की ओर गया है।

फल
- लाभ – परिश्रम का **फल** सदैव मीठा होता है।
- परिणाम – कल मेरा **परीक्षाफल** मिलेगा।

जल
- जल जाना – दुकान में आग लगने से सब कुछ **जल** गया।
- पानी – मुझे पीने के लिए शीतल **जल** दो।

7. (क) सुख – दुख (ख) गुण – अवगुण (ग) भूख – प्यास

(घ) कंद – मूल (ङ) प्रश्न – उत्तर

8.

वाक्य	स्त्रीलिंग/पुल्लिंग
(क) उन्हें **फल** बहुत ही स्वादिष्ट और मीठे लगे।	पुल्लिंग
(ख) **राजा** अपने राज्य का नेता होता है।	पुल्लिंग
(ग) उन्हें भूख-**प्यास** भी लग रही थी।	स्त्रीलिंग
(घ) **बोधिसत्त्व** ने पके फल खाने के लिए दिए।	पुल्लिंग
(ङ) ब्रह्मदत्त की सारी **जिज्ञासा** शांत हो गई।	स्त्रीलिंग

सोच-समझ की बात

1. बच्चों को बताएँ कि सिद्धार्थ के बुद्ध बनने से पहले उन्होंने अनेक बार बोधिसत्व के रूप में जन्म लिया था। उनके जीवन से संबंधित जातक कथाओं का संबंध इन्हीं से है।
2. बच्चों से चर्चा करें इस कहानी का नाम निश्चय इसलिए रखा गया है क्योंकि राजा ने निश्चय किया था कि वह बोधिसत्त्व के कथनों को परखकर ही रहेगा। इसका अन्य शीर्षक 'संकल्प' या 'जैसा राजा वैसी प्रजा' भी हो सकता है।

कुछ करने की बात

- महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। बचपन से ही उनके मन में करुणा भरी थी। उनसे किसी भी प्राणी का दुख नहीं देखा जाता था। महात्मा बुद्ध को सारनाथ में सच्चे बोध की प्राप्ति हुई। वहीं पर उन्होंने सबसे पहला धर्मोपदेश दिया। उन्होंने मध्यम मार्ग अपनाने के लिए कहा। दुख, उसके कारण और निवारण का मार्ग बताया। अहिंसा के मार्ग को अपनाने के लिए कहा। यज्ञ और पशु-बलि की निंदा की। उन्होंने सत्य, अहिंसा, प्रेम और करुणा, सेवा और त्याग से परिपूर्ण जीवन बिताया।

3. बदल गई विचारधारा

पाठ का प्रारंभ–बच्चों को बताएँ कि हमें पशु-पक्षियों को नहीं सताना चाहिए। वे भी मनुष्य की भाँति प्यार को पहचानते हैं। उनमें अहिंसा के गुणों का संचार करें। कहें–हमें सभी जीवों के प्रति दया

का भाव रखना चाहिए। उनके प्रति संवेदनशील होना चाहिए। मनुष्य का पशु-पक्षियों के साथ अटूट संबंध है।

अभ्यास कार्य

पाठ की बात

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) आलोक रोज़-रोज़ नई-नई शैतानियाँ करता था, इसीलिए सभी लोग उससे परेशान थे।

(ख) जब आलोक ने कबूतरों को दाना चुगते देखा तो उसने दौड़कर कबूतरों को उड़ा दिया। फिर कंकड़ उठाकर उनकी ओर फेंका। वह कंकड़ एक कबूतर के लगा और वह घायल होकर नीचे गिर पड़ा।

(ग) माँ ने जब घायल कबूतर को देखा तो उन्हें बहुत क्रोध आया। उन्होंने आलोक से कहा-"आलोक, तुम्हें बहुत मज़ा आता है पशु-पक्षियों को तंग करने में? परंतु ज़रा सोचो, यदि तुम्हें कोई पत्थर मारे तो तुम्हें कैसा लगेगा?"

(घ) नेवले को देखकर आलोक ने एक बड़ा-सा पत्थर उठाकर उसकी ओर फेंक दिया।

(ङ) जंगल में एक विषैले साँप को देखकर आलोक पसीना-पसीना हो गया।

(च) आलोक ने जिस नेवले को पत्थर से मारा था, उसी नेवले ने साँप पर वार करके उसकी जान बचाई।

2. (क) थोड़ी ही देर **में** बस चल दी।

(ख) माँ ने घायल कबूतर **को** उठाया।

(ग) कबूतर पास ही एक वृक्ष **पर** जा बैठा।

(घ) आलोक स्कूल जाने **के लिए** तैयार होने लगा।

(ङ) अचानक हुए आक्रमण **से** कबूतर चौंक गए।

(च) पक्षी और मनुष्य **का** संबंध तो बहुत पुराना है।

भाषा की बात

1. (क) आलोक नई-नई **शैतानी** करता था।

(ख) उन्होंने कबूतर के **पंख** को अच्छी तरह धोया।

(ग) उसे पेड़ के नीचे **नेवले** आराम करते हुए दिखाई दिए।

(घ) उसे **झाड़ी** के नीचे एक सुंदर फूल दिखाई दिया।

(ङ) **अनेक** विषैले साँप फन फैलाए खड़े थे।

2.

श	न	ई	सुं	ड़
रा	क	भ	द	जं
र	ब	ड़ा	र	ग
ती	वि	षै	ला	ली

विशेषण	**विशेष्य**
शरारती	लड़का
सुंदर	फूल
विषैला	साँप
बड़ा	पत्थर
जंगली	जानवर

3. (क) वार – सप्ताह का दिन
   वार – हमला

   (ख) बस – वाहन
   बस – काफ़ी

   (ग) फन – साँप का फन
   फ़न – कला, कौशल

   (घ) मन – इच्छा
   मन – वज़न

4. (क) **वह** शीघ्र उड़ नहीं पाया।
   (ख) **वे** सब वहीं बस से उतर गए।
   (ग) **उसे** एक ज़ोरदार फुफकार सुनाई पड़ी।
   (घ) **हमें** कभी भी पशु-पक्षियों को सताना नहीं चाहिए।
   (ङ) आलोक की इस हरकत पर **उन्हें** बहुत क्रोध आया।

5.

स् + थ = स्थ	उपस्थित	स्थान	**स्थानीय**
त् + थ = त्थ	पत्थर	कत्था	**जत्था**
स् + त = स्त	मस्त	नमस्ते	**स्तर**
प् + य = प्य	प्यार	प्यास	**प्याज**

6. (क) पशु – पक्षी (ख) हँसते – खेलते (ग) भूख – प्यास
   (घ) कीट – पतंगे (ङ) इधर – उधर

7. भय × निर्भय; सुंदर × असुंदर; पुराना × नया; प्यार × घृण; जंगली × पालतू; आराम × मेहनत

सोच-समझ की बात

1. बच्चों से चर्चा करें कि हम सबसे कभी न कभी जाने-अनजाने में कोई भूल हो जाती है। परंतु अपनी भूल का अहसास होना बहुत महत्वपूर्ण है। जो व्यक्ति अपनी भूल को स्वीकार कर लेता है वह दूसरों की दृष्टि में बड़ा हो जाता है। जैन संप्रदाय को मानने वाले लोग वर्ष में एक बार क्षमावाणी पर्व मनाते हैं जिसमें एक-दूसरे से अपनी भूल की क्षमा-याचना करते हैं। ईसाई लोग चर्च में जाकर अपनी भूल को स्वीकार करते हैं। अब आप बताएँ क्या आपने कभी अपनी भूल को स्वीकार किया है?

2. आप कभी किसी जंगल में गए हैं? कल्पना कीजिए कि उस जंगल में आप अपने किसी साथी के साथ रास्ता भूल गए हैं। उस स्थिति में आपके मन में क्या भाव आए, क्या महसूस किया, क्या देखा उसके बारे में बताइए।
3. आपने पशु-पक्षी से संबंधित बहुत कहानियाँ पढ़ी व सुनी होंगी। ऐसी किसी एक कहानी को संक्षेप में सुनाइए।

कुछ करने की बात

1.

नाम	राज्य का नाम
काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान	आसाम
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	राजस्थान
पेरियार राष्ट्रीय उद्यान	केरल
सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान	राजस्थान
कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान	उत्तराखंड

2. बच्चे तरह-तरह के देशी और विदेशी पशु-पक्षियों के चित्र इंटरनेट से प्राप्त करके एलबम में चिपकाएँ व उनके बारे में दो-दो पंक्तियाँ लिखें।

* अनोखा ठग

यह पाठ पढ़कर आनंद लेने के लिए है। काशीनाथ नामक एक आदमी किसी न किसी प्रकार से गाँववालों को ठगता रहता है। एक दिन वह सूफ़िया और कई घरों से स्वेटर माँगकर लाता है और कुछ दिन बाद सभी को दो-दो स्वेटर वापस कर देता है। सभी गाँववाले उसकी हरकत से हैरान हो जाते हैं। वह कहता है कि ये आपके स्वेटर के बच्चे हैं। इसे आप रख लें।

कुछ दिन बाद काशीनाथ गाँववालों से पश्मीने के शाल माँगकर लाता है। सब उसे यह सोचकर शाल दे देते हैं कि वह दो-दो शालें वापस करेगा। काशीनाथ सबकी शालें रख लेता है और कहता है कि सबकी शॉलें अपने बच्चों को लेकर चली गईं।

4. खिलौनेवाला

कविता का प्रारंभ—आप जब बाज़ार, मेला या मॉल जाते हैं तो सबसे ज़्यादा आपको कौन-सी चीज़ आकर्षित करती है—खिलौने। आजकल एक से बढ़कर एक खिलौने बाज़ार में मौजूद हैं। आप किस-किस तरह के खिलौने खरीदना पसंद करेंगे? आप कब-कब खिलौने खरीदते हैं? पहले के समय में, कहीं-कहीं आज भी घरों के आस-पास खिलौनेवाले देखने को मिलते हैं। वे तरह-तरह के खिलौने बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के लिए लाते हैं। आज हम एक ऐसी ही कविता पढ़ेंगे जिसमें खिलौनेवाला का वर्णन किया गया है।

अभ्यास कार्य

कविता की बात

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) खिलौनेवाले के पास हरा तोता, गेंद, मोटर गाड़ी, रेलगाड़ी, गुड़िया, टी-सैट, लोटा थाली, धनुष-बाण और तलवार हैं।

(ख) सरला माँ से साड़ी लेने के लिए मचल रही है।

(ग) बालक तीर-कमान या तलवार लेने की ज़िद इसलिए कर रहा है, क्योंकि वह ताड़का को मारकर राम के समान बनना चाहता है।

(घ) राम, कौशल्या, ताड़का।

2. (क) तुम सोचोगी मैं ले लूँगा
तोता, बिल्ली, मोटर, रेल
पर माँ, यह मैं कभी न लूँगा
ये तो हैं बच्चों के खेल।

(ख) छोटे-छोटे धनुष-बाण हैं
हैं छोटी-छोटी तलवार
नए खिलौने ले लो भैया
ज़ोर-ज़ोर वह रहा पुकार।

(ग) किससे लूँगा पैसे, रूठूँगा
तो कौन मना लेगा
कौन प्यार से बिठा गोद में
मनचाही चीज़ें देगा।

भाषा की बात

1. सब्ज़ीवाला; पानवाला; दूधवाला; रिक्शेवाला; फलवाला; गाड़ीवाला

2.

माँ	– जननी	माता	अंबा
वन	– जंगल	अरण्य	कानन
कपड़ा	– वस्त्र	अंबर	परिधान
असुर	– राक्षस	निशाचर	दानव
तलवार	– कृपाण	खड्ग	असि

3.

वाण – बाण	यग्य – यज्ञ	रामचंर्द – रामचंद्र
असूर – असुर	रुठूँगा – रूठूँगा	कोशल्या – कौशल्या
धनुश – धनुष	ताडका – ताड़का	

सोच-समझ की बात

1. बच्चे अक्सर अपने मन की इच्छा पूरी न होने पर रूठ जाते हैं। शिक्षिका उनसे ऐसा कोई प्रसंग पूछें जब वे रूठे हों और किसी ने उन्हें मनाया हो। वे सबसे ज़्यादा किससे तथा किस बात पर रूठते हैं?
2. **बालक** बहुत वीर है। वह अन्य बच्चों की तरह मोटरगाड़ी, गेंद, गुड़िया आदि खिलौने नहीं लेना चाहता बल्कि श्रीराम की तरह तीर-कमान और तलवार खरीदना चाहता है जिससे राक्षसों का वध कर सके।

   खिलौनेवाला बच्चों को आकर्षित करने के लिए बहुत-से खिलौने लाया है। उसमें हरा तोता, चाभी वाली रेल, छोटी-सी मोटरगाड़ी, गुड़िया, तीर-कमान और तलवार आदि बहुत-से खिलौने हैं।
3. कक्षा में बच्चों से उनकी पसंद के खिलौने पूछें। फिर उनसे कारण जानने का प्रयास करें।

कुछ करने की बात

1. शिक्षिका बच्चों से चर्चा करें। पूछें कि रामलीला कब होती है? क्या आपने रामलीला देखी है? रामलीला का संबंध किससे है? इस प्रकार चर्चा करने के बाद बच्चों से रामलीला का कोई एक प्रसंग सुनाने को कहें।
2. बच्चे कविता को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपनी कल्पना से चित्र बनाएँ।

5. उल्लू की अदालत

नाटक का प्रारंभ—बच्चों को बताएँ कि कोयल वास्तव में अपना घोंसला नहीं बनाती और अपने अंडे कौए के घोंसले में रख देती है। कोयल की जिस कूक को सुनना हमें अच्छा लगता है, वह नर कोयल की होती है। इस नाटक को रोचक ढंग से पढ़वाएँ। बच्चे जिन शब्दों को अशुद्ध बोलें उन्हें श्यामपट पर लिखें तथा बाद में शुद्ध उच्चारण करवाएँ।

अभ्यास कार्य

नाटक की बात

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

   (क) कोयल का वकील भालू था।

   (ख) कोयल ने कौए को खतरनाक इसलिए कहा क्योंकि कौआ कोयल के बच्चों को कभी चोंच से तो कभी पंजों से मारता है।

   (ग) कौए ने कोयल को धोखेबाज इसलिए कहा क्योंकि कोयल चुपके से अपने अंडे कौए के घोंसले में रख देती है। कौआ और उसकी पत्नी अपने अंडे समझकर उन्हें सेते हैं, दाना चुग-चुगकर खिलाते हैं।

   (घ) न्यायाधीश ने कोयल से उसकी सुरीली आवाज़ छीन ली।

2. (क) फ़ाइलें लिए बंदर पीछे-पीछे **आता है**।

(ख) कोयल चुप हो **जाती** है।

(ग) बच्चे कौए और उसकी पत्नी के पास पले-बड़े **थे**।

भाषा की बात

1. अनुसासन – अनुशासन   काग्रवाही – कार्यवाही

नयायाधीश – न्यायाधीश   सवाभाविक – स्वाभाविक

2. (क) सर्दी – सरदी   (ख) गर्मी – गरमी

(ग) गर्दन – गरदन   (घ) सर्कस – सरकस

3. शांति × अशांति; सच × झूठ; सवाल × जवाब; साधारण × असाधारण; सही × गलत

दूर × पास; मीठा × कड़वा; स्पष्ट × अस्पष्ट; आगे × पीछे; सफल × असफल

4. न्याय करनेवाला – न्यायाधीश   जो पढ़ा-लिखा न हो – अनपढ़

झूठ बोलनेवाला – झूठा   काम से जी चुरानेवाला – कामचोर

धोखा देनेवाला – धोखेबाज़   जहाँ न्याय के लिए जाते हैं – न्यायालय

5. अनु + राग = अनुराग   अ + काल = अकाल

अनु + करण = अनुकरण   अ + सत्य = असत्य

अनु + कूल = अनुकूल   अ + ज्ञान = अज्ञान

6. **संज्ञा** – कोयल, उल्लू, बंदर, भालू, कौआ

सर्वनाम – आप, हम, मैं, मेरी, उन्हें

क्रिया – कहना, मारना, निकलना, सोचना, रोना

सोच-समझ की बात

- बच्चों से पाठ्यपुस्तक (पृष्ठ-37) पर दिए 'श्रीमान, यह कोयल धोखेबाज़ है.... दूर बैठकर देखती रहती है।' नाटक का भाग पढ़वाएँ और उस पर चर्चा करने को कहें। कोयल अपने अंडे कौए के घोंसले में क्यों रख देती है? कौए को अपने तथा कोयल के अंडों में अंतर क्यों नहीं दिखाई देता? आदि।

कुछ करने की बात

- बच्चों से नाटक के अनुसार अभिनय करवाएँ और संवाद बुलवाएँ।

* मुल्ला नसरुद्दीन (चित्रकथा)

बच्चों को मुल्ला नसरुद्दीन का परिचय दें। बताएँ कि नसरुद्दीन की बुद्धिमत्ता उनके उपदेशों में भी झलकती थी। वे बहुत ही हाज़िरजवाब थे। मुल्ला नसरुद्दीन के कुछ किस्से कक्षा में सुनाएँ।

बच्चे एक-एक चित्र को देखते हुए, चित्रों के आधार पर कहानी बनाएँ। पूरी कहानी सुनाएँ।

इकाई-2 : अनोखा संसार

6. जापान

पाठ का प्रारंभ—पाठ पढ़ाने से पहले बच्चों से अपने देश के लिए प्रेम पर चर्चा करें। पूछें—आप अपने देश के लिए क्या-क्या कर सकते हैं? फिर उन्हें जापान के बारे में बताएँ। कहें—जापान के लोग बहुत ही परिश्रमी, देशभक्त और ईमानदार होते हैं। आज हम जापान के बारे में पढ़ेंगे।

अभ्यास कार्य

पाठ की बात

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

   (क) सूर्योदय सबसे पहले जापान में होता है, इसलिए जापानी लोग अपने देश को 'नीपान' कहते हैं।

   (ख) जब स्वामी रामतीर्थ ने एक विद्यार्थी से पूछा कि यदि किसी देश की सेना तुम्हारे देश पर आक्रमण करे और उस सेना के सेनापति महात्मा बुद्ध या कन्फ्यूशियस हो तब तुम क्या करोगे? यह सुनकर विद्यार्थी गुस्से से बोला—"यदि कोई मेरे देश की ओर आँख उठाकर भी देखेगा तो मैं उसकी आँखें ही फोड़ दूँगा। फिर चाहे बुद्ध हों या कन्फ्यूशियस।"

   (ग) जापान में गुड़ियों का त्योहार मार्च माह के तीसरे दिन मनाया जाता है।

   (घ) जापानी लोग फूलों का त्योहार 'हाना मतसूरी' अप्रैल के महीने में मनाया जाता है। इस दिन वे मंदिरों और अपने घरों को विशेष रूप से सजाते हैं।

   (ङ) जापान के लोग अत्यधिक परिश्रमी होने के साथ-साथ समय के पाबंद होते हैं। इसलिए जापान की गिनती अत्यधिक समृद्ध देशों में की जाती है।

   (च) जापान की परंपरागत पोशाक 'किमोनो' है परंतु आजकल जापानी लोग पश्चिमी वस्त्र भी पहनने लगे हैं। उनका प्रिय भोजन चावल, मछली, फल और सब्ज़ी है।

2. (क) तुम किस **धर्म** को मानते हो?

   (ख) मैं उनका **सम्मान** करता हूँ।

   (ग) जापान के लोग प्रकृति **प्रेमी** भी होते हैं

   (घ) जापान की रेलगाड़ियाँ विश्व-भर में **प्रसिद्ध** हैं।

भाषा की बात

1. विद्या + आलय = विद्यालय   देश + भक्त = देशभक्त

   देव + आलय = देवालय   महा + आत्मा = महात्मा

2. (क) मैंने माता-पिता को **प्रणाम** किया।
   कल मेरा परीक्षा **परिणाम** निकलेगा।

(ख) हमें सदैव बड़ों का **सम्मान** करना चाहिए।
लड़का और लड़की एक **समान** हैं।

(ग) प्रत्येक जापानी अपनी **मातृ** भाषा बोलता है।
मुझे **मात्र** एक पेंसिल चाहिए।

3. (क) तुम किस धर्म को मानते हो?
(ख) यह बच्चों का पर्व होता है।
(ग) विद्यार्थी ने कहा–"महात्मा बुद्ध तो भगवान हैं।"
(घ) जापानियों का प्रिय भोजन चावल, मछली, फल और सब्ज़ी है।
(ङ) अरे वाह! कितना सुहावना मौसम है।

4. संसार + इक = सांसारिक   धर्म + इक = धार्मिक
मास + इक = मासिक   परिवार + इक = पारिवारिक

5. **महान**	संत	**समृद्ध**	देश	**सुंदर**	गुड़िया
अनोखा	पर्व	**परंपरागत**	पोशाक	**रंग-बिरंगे**	कागज़

6.

आक्रमण →	कपड़ा	परिश्रमी →	उन्नत
सुगंध →	हमला	समृद्ध →	मेहनती
अवसर →	खुशबू	प्रथा →	बुलाना
वस्त्र →	मौका	आमंत्रित →	रीति-रिवाज़

सोच-समझ की बात

1. बच्चों से जापान के लोगों के बारे में चर्चा करें। प्रयास करें कि पाठ के आधार पर बच्चे स्वयं बताएँ कि जापान के लोग सच्चे देशभक्त हैं। वे अपने देश के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित हैं।
2. शिक्षिका बच्चों को बताएँ कि हमारे देश में अनेक प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर हैं जो विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं जिसमें आगरा का ताजमहल, अजंता एलोरा की गुफाएँ, कोणार्क का सूर्यमंदिर, बनारस के घाट आदि हैं। इतना ही नहीं यहाँ का संगीत भी विश्व प्रसिद्ध है।

कुछ करने की बात

1. जापान चार द्वीपों का समूह है–होक्काइडो, होन्शू, शिकोकू तथा क्यूशू। यहाँ के लोग बौद्ध धर्म को मानते हैं और स्वभाव से बहुत विनम्र होते हैं। यहाँ के मुख्य त्योहार 'गुड़ियों का त्योहार', 'हाना मतसूरी' तथा 'सिची-गो-सेन' हैं। जापानी लोग कुछ पल शांति से बिताने के लिए बाँस एवं लकड़ी से बने चाय घर में चाय पीने जाते हैं।
2. (क) जापान एक समृद्धशाली देश है।
(ख) जापान के लोग परिश्रमी होने के साथ-साथ समय के पाबंद भी होते हैं।

(ग) जापान के लोग अपनी मातृभाषा बोलते हैं।

(घ) जापान के लोग देशभक्त होने के साथ-साथ प्रकृति प्रेमी भी होते हैं।

7. दो चिड़ियाँ

कविता का प्रारंभ—बच्चों को बताएँ—कुछ लोग चिड़ियों को पिंजरे में बंद करके रखते हैं और उन्हें बड़े प्यार से भोजन, पानी देते हैं। आपने खुले आकाश में उड़ती चिड़ियों को भी देखा होगा। पिंजरे की चिड़िया सुरक्षित किंतु अकर्मण्य है। जबकि उड़ती चिड़िया दाने के लिए परिश्रम करती है और उसे अन्य पक्षियों से स्वयं को सुरक्षित भी रखना पड़ता है। आपके विचार से कौन-सी चिड़िया प्रसन्न होगी?

अभ्यास कार्य

कविता की बात

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) घर की चिड़िया पिंजरे में बंद थी, इसलिए उदास थी।

(ख) वन की चिड़िया घर की चिड़िया से बोली कि तू इस पिंजरे को छोड़कर मेरे साथ वन में चल।

(ग) इस कविता के माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि बंधन में रहकर व्यक्ति इतना कमज़ोर हो जाता है कि उसे बाहर निकलने में भी भय लगता है।

2. (क) बोली पिंजरे की चिड़िया तब
"सुन री चिड़िया वन की
तू भी आ, बस जा पिंजरे में
बात करें दो मन की।"

(ख) "छोड़ चलूँ सोने का घर मैं
भटकूँ जाकर वन में,"
घर की चिड़िया थी पिंजरे में,
वन की चिड़िया वन में।

भाषा की बात

1.

विधि	ब्रह्मा	– यह सब **विधि** का खेल है।
	नियम	– हमें हर कार्य **विधि**पूर्वक करना चाहिए।
बस	बहुत होना	– **बस** कीजिए, मैं अब थक चुका हूँ।
	यात्रा का साधन	– मैं **बस** द्वारा चंडीगढ़ जा रहा हूँ।

सोना < नींद में होना – मैं अब **सोना** चाहती हूँ।
एक कीमती वस्तु – आजकल **सोना** बहुत महँगा हो गया है।

2. वन – जंगल | घर – गृह
संग – साथ | बंधन – कैद
उदास – दुखी | दिवस – दिन

3. संग – तंग | घर – वर
बात – सात | सुन – बुन

4. दिवस – द् + इ + व् + अ + स् + अ
उदास – उ + द् + आ + स् + अ
चिड़िया – च् + इ + ड़् + इ + य् + आ
अचानक – अ + च् + आ + न् + अ + क् + अ

5. (क) घर की चिड़िया पिंजरे में थी।
(ख) वन की चिड़िया वन में थी।
(ग) एक दिवस वे अचानक मिलीं।
(घ) कुछ विधि के मन में थी।

6.

दिव**स**	**स**ड़**क**	**क**म**ल**	**ल**ड़**का**	**का**न
बंध**न**	**न**र्म**दा**	**दा**न**व**	**व**सं**त**	**त**लवार
बत**ख**	**ख**रगो**श**	**श**लग**म**	**म**जदूर	**र**स्सी

सोच-समझ की बात

1. बच्चों से चर्चा करें कि यदि आपको आपकी मनपसंद चीज़ें जैसे–खाने की चीज़ें, पुस्तकें दे दी जाएँ और आपको दो दिन के लिए कमरे में बंद कर दिया जाए और सभी सुविधाएँ दे दी जाएँ। उस स्थिति में आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी?
2. बच्चों से पूछें कि वन में उन्होंने कौन-कौन सी चिड़ियों को देखा है? उनमें से कौन-सी चिड़िया आपको पसंद आई? कल्पना कीजिए आप वन की चिड़िया हैं तब आप क्या-क्या करेंगे?

कुछ करने की बात

- स्वतंत्रता सभी को अच्छी लगती है। केवल मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षी भी स्वतंत्र जीवन जीना चाहते हैं। स्वतंत्रता पर प्रत्येक प्राणी का जन्मसिद्ध अधिकार है। जो व्यक्ति परतंत्र होता है उसका मानसिक व आत्मिक विकास रुक जाता है। उसका अपना कोई अलग व्यक्तित्व नहीं होता। वह दूसरों पर निर्भर होकर रहा जाता है। चाहे वह कितना भी प्रतिभाशाली हो। परतंत्रता की स्थिति में उसकी सभी प्रतिभाएँ छिप जाती हैं। इसीलिए हर प्राणी स्वतंत्र रहना चाहता है। देश को आज़ाद कराने के लिए हज़ारों वीरों ने हँसते-हँसते अपने प्राण अर्पित कर दिए।

8. प्लास्टिक प्रदूषण

पाठ का सारांश–पाठ पढ़ाने से पहले बच्चों को प्लास्टिक से होने वाली हानियों के बारे में बताएँ। प्लास्टिक बैग न केवल पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं बल्कि कई बीमारियों को भी जन्म देते हैं। उन्हें बताएँ कि प्राय: लोग प्लास्टिक बैगों को सड़कों पर फेंक देते हैं। जो जानवर खा लेते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है। कहें–हमें प्लास्टिक बैगों की जगह कपड़े का बैग प्रयोग में लाना चाहिए। प्लास्टिक की थैलियाँ इधर-उधर फेंकने से गंदगी तो फैलती ही है साथ ही पर्यावरण को भी खतरा उत्पन्न होता है। प्लास्टिक की थैलियाँ नष्ट नहीं होतीं जिसका प्रभाव उपजाऊ भूमि पर पड़ता है और फ़सल का उत्पादन भी कम होता है।

अभ्यास कार्य

भाषा की बात

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
   (क) प्रियांशी ने अपनी सखी अक्षिता को पत्र लिखा है।
   (ख) पॉलिथिन प्राकृतिक रूप से नष्ट नहीं होता जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इसके कारखानों से प्रदूषण फैलता है।
   (ग) पॉलीथिन की समस्या से छुटकारा पाने के लिए हमें कागज़ या कपड़े से बने थैले-थैलियों का ही प्रयोग करना चाहिए।
2. (क) पॉलीथिन प्राकृतिक रूप से **नष्ट** नहीं होता।
   (ख) अच्छी फ़सल और पैदावार के लिए पॉलीथिन बहुत **नुकसानदायक** है।
   (ग) घर हो या दुकान सभी जगह **प्लास्टिक** का बोलबाला है।
   (घ) मानव जीवन के विकास के लिए **स्वच्छ** वातावरण का होना अत्यंत ज़रूरी है।

भाषा की बात

1. हानि × लाभ — स्वच्छ × अस्वच्छ
   गलत × सही — स्वार्थ × निस्वार्थ
   सुविधा × असुविधा — सावधानी × असावधानी
2. **'ता' के योग से बने शब्द** – महानता, प्रसन्नता, वीरता, मधुरता
   'ई' के योग से बने शब्द – खेती, गरमी, हँसी, योगी
3. अनमोल = अ + न् + अ + म् + ओ + ल् + अ
   उपहार = उ + प् + अ + ह् + आ + र् + अ
   सुविधा = स् + उ + व् + इ + ध् + आ
   विकास = व् + इ + क् + आ + स् + अ

परिणाम = प् + अ + र् + इ + ण् + आ + म् + अ

सराहनीय = स् + अ + र् + आ + ह् + अ + न् + ई + य् + अ

वातावरण = व् + आ + त् + आ + व् + अ + र् + अ + ण् + अ

4.

तत्सम	**तद्भव**
हस्त	घर
क्षेत्र	हाथ
मृत्तिका	पंछी
गृह	मिट्टी
पक्षी	खेत

5. (क) मेज़ के नीचे खिलौना है।

(ख) मेरे घर के सामने मैदान है।

(ग) विद्यालय के पास बहुत पेड़-पौधे हैं।

(घ) अक्षत विद्यालय की ओर गया है।

(ङ) अजय पिताजी के साथ घूमने जा रहा है।

(च) निधि रिया के बाद आई।

6.

खेत – पुल्लिंग	गाय – स्त्रीलिंग
सरकार – स्त्रीलिंग	थैली – स्त्रीलिंग
उपहार – पुल्लिंग	कागज़ – पुल्लिंग

सोच-समझ की बात

1. बच्चों से चर्चा करें कि उन्हें कैसा वातावरण पसंद है? साफ़ या गंदा? बताएँ कि प्रकृति ने तो हमें स्वच्छ वातावरण प्रदान किया था परंतु मनुष्य ने इसे स्वार्थवश गंदा कर दिया। प्रयास करें कि बच्चे स्वयं बताएँ कि किन-किन कारणों से वातावरण प्रदूषित हुआ है। इस प्रकार चर्चा करने के बाद बच्चों से स्वयं बताने को कहें कि वे वातावरण में किस तरह का बदलाव लाना चाहते हैं।

2. बच्चों से जल-प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण तथा भू-प्रदूषण के कारण पर चर्चा करें। कारखानों के दूषित जल से, शवों के नदियों में फेंके जाने से, कपड़े धोने से तथा लोगों के नदियों में नहाने से जल-प्रदूषण होता है। कल-कारखानों तथा वाहनों के धुएँ से वायु प्रदूषण होता है। ज़ोर-ज़ोर से लाउडस्पीकर के बजने से ध्वनि प्रदूषण तथा जगह-जगह गंदगी फैलाने और रासायनिक खादों के प्रयोग से भूमि-प्रदूषण हो रहा है। प्रदूषण को रोकने के लिए अत्यंत आवश्यक है कि धरती पर अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएँ। साथ ही रासायनिक पदार्थों का प्रयोग कम से कम किया जाए तथा स्वच्छता का पूर्णतः ध्यान रखा जाय।

कुछ करने की बात

1. प्लास्टिक प्रदूषण दूर करने के लिए सर्वप्रथम हमें जागरूक होना पड़ेगा और दूसरों को भी जागरूक करना पड़ेगा।
2. सुविधाजनक प्रतीत होने वाले प्लास्टिक बैग की जगह कपड़े, कागज़ या जूट के थैलों का प्रयोग करेंगे।
3. प्लास्टिक की वस्तुओं का कम से कम प्रयोग करेंगे। यह हमारे लिए ही नहीं वरन् पर्यावरण के लिए भी हानिकारक है।
4. प्लास्टिक एक ऐसी वस्तु है जो नष्ट नहीं होती।
5. इसको जलाने से जो धुआँ निकलता है वह हानिकारक होता है। अतः इसे नहीं जलाना चाहिए।
6. इसे मिट्टी में दबाने से भूमि की उर्वरता नष्ट हो जाती है। अतः प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने के 'रिसाईकल' करना चाहिए।

* कर लो पर्यावरण सुधार

यह कविता पढ़कर आनंद लेने के लिए है। इसमें कवि ने बताया है कि मानव स्वयं अपना अपराधी है। मानव ने जिन वृक्षों को कटवाया है, उसी के कारण वर्षा नहीं होती, अत्यधिक गर्मी पड़ती है। नदी, तालाब सब सूख गए हैं। पशु-पक्षी, नर-नारी सभी व्याकुल हो रहे हैं। किंतु अभी भी हमें समय रहते जागना होगा। अर्थात् अधिक से अधिक वृक्ष लगवाने होंगे जिससे पर्यावरण में सुधार हो।

9. जादुई गुड्डा

पाठ का प्रारंभ–बच्चों को पहले बताएँ कि हमें कभी आलस्य नहीं करना चाहिए। आलस्य हमारी सफलता के मार्ग में बाधक होता है। हमें सदैव दूसरों की सहायता करनी चाहिए। समय से पढ़ाई-लिखाई आदि सभी कार्य करने चाहिए। अपना सामान सही ढंग से रखना चाहिए। पूछें–आप सुबह कितने बजे उठते हैं? रात को कितने बजे सोते हैं?

कहें–आज हम ऐसा पाठ पढ़ेंगे जिसमें रिंकू आलस्य के कारण कोई भी कार्य ठीक से नहीं करता था। आओ पाठ पढ़कर देखें कि रिंकू को अच्छा और समझदार लड़का किसने और कैसे बनाया?

अभ्यास कार्य

पाठ की बात

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(क) रिंकू दिमाग से तेज़ परंतु आलस्य से भरपूर था।

(ख) बस स्टैंड पर देरी से पहुँचने के कारण बस निकल गई और रिंकू बस नहीं पकड़ पाया।

(ग) रिंकू ने पुरानी हवेली के पास एक विचित्र गुड्डे को देखा जिसकी एक टाँग पत्थर के नीचे दबी हुई थी। वह दर्द से कराह रहा था और उसकी आँखों से आँसू भी निकल रहे थे।

(घ) स्कूल से लौटने पर रिंकू ने अपनी स्कूल यूनीफार्म, बैग और जूते-मोजे इधर-उधर फेंक दिए।

(ङ) माँ कार्यालय से आकर इसलिए अचंभित थीं क्योंकि रिंकू ने अपना सारा सामान ठीक जगह पर रखा था।

(च) चिंकू दूसरे लोक का प्राणी था। वह कुछ ही दिनों के लिए पृथ्वी पर आया था।

2. (क) समाचार-पत्र पढ़ने से हमें क्या लाभ हैं?

(ख) सुबह-सुबह पढ़ने से क्या लाभ है?

(ग) रिंकू को कोई अपना मित्र क्यों नहीं बनाता था?

(घ) गुड्डे की एक टाँग कहाँ दबी हुई थी?

3. (क) रिंकू ने माँ से कहा।

(ख) माँ ने रिंकू से कहा।

(ग) गुड्डे ने रिंकू से कहा।

भाषा की बात

1. (क) तुम **रोज़** ही देर करते हो।

(ख) उफ़, इतनी **जल्दी** उठना पड़ेगा।

(ग) मैं अब **हमेशा** इसका ध्यान रखूँगा।

(घ) चार दिन से समाचार-पत्रों में **लगातार** छप रहा है।

2. देश-विदेश = देश और विदेश

जूते-मोजे = जूते और मोजे

इधर-उधर = इधर और उधर

गुड्डे-गुड़िया = गुड्डे और गुड़िया

3. (क) क्या तुम मेरी मदद करोगे**?**

(ख) **“**हाँ, थोड़ा-थोड़ा याद है।**”**–रिंकू ने उत्तर दिया।

(ग) रिंकू ने अपनी स्कूल यूनीफॉर्म**,** बैग और जूते-मोजे रोज़ाना की तरह फेंके।

(घ) अरे**!** कितना अच्छा घर है तुम्हारा।

(ङ) गणित का टैस्ट भी शत-प्रतिशत सही हुआ**।**

4. (क) रिंकू दिमाग से तेज़ **परंतु** आलस्य से भरपूर था।

(ख) मैं तो टी.वी. देखता हूँ **और** वीडियो गेम खेलता हूँ।

(ग) उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था **कि** गुड्डा सचमुच में बोल रहा है।

(घ) मैं तुमसे दूर चला जाऊँगा **क्योंकि** मैं दूसरे लोक का प्राणी हूँ।

5. स्कूल – School　　　　यूनीफार्म – Uniform

टैस्ट – Test　　　　प्रोग्राम – Programme

सोच-समझ की बात

1. आपने अलादीन के जादुई चिराग के बारे में सुना होगा कि किस प्रकार वह जादुई चिराग की सहायता से कुछ भी प्राप्त कर लेता था तथा कहीं भी पहुँच जाता था। बच्चों से कहें कि यदि उन्हें जादुई गुड्डा मिल जाए तो वे उससे कौन-कौन से काम करवाएँगे? आपको कौन-कौन से काम करवाने चाहिए?
2. यदि मुझे जादुई गुड्डा घायल अवस्था में मिलता तो मैं उससे पूछता कि वह घायल कैसे हुआ? फिर उसकी मरहम-पट्टी करता। उससे बातचीत करके उसके बारे में जानकारी प्राप्त करता।

कुछ करने की बात

1. बच्चों की पुराने समाचार-पत्रों से मुख्य-मुख्य समाचारों को फाड़कर एक कोलाज तैयार करने में सहायता कीजिए।
2. (क) हमें सुबह जल्दी उठना चाहिए।

   (ख) सभी काम समय पर करने चाहिए।

   (ग) खाना खाने से पहले हाथ साबुन से अच्छी तरह साफ़ ज़रूर करने चाहिए।

* सुंदरी और दानव

यह पाठ पढ़कर आनंद लेने के लिए है। इस पाठ से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें सबकी मदद करनी चाहिए। सुंदरी भी एक ऐसी लड़की थी जिसे सबकी मदद करना अच्छा लगता था। एक दिन उसके पिता किसान किसी काम से शहर गए। वहाँ से लौटते समय वे जंगल में रास्ता भटक गए और एक अजनबी महल में चले गए। वहाँ बहुत-सी खाने-पीने की चीज़ें थीं। उन्होंने सब चीज़ें खाईं और आराम करके सुबह घर के लिए जाने लगे। जाने से पहले बगीचे में से एक गुलाब तोड़ने लगे तभी एक भयावह दानव सामने आया। दानव उस किसान को मारने ही वाला था कि किसान ने उसे अपनी बेटी सुंदरी के बारे में बताया। दानव ने किसान से तीन दिन के भीतर अपनी बेटी को दानव के पास छोड़ने के लिए कहा। सुंदरी दानव के साथ रहने लगी। दानव सुंदरी का बहुत ध्यान रखता था। एक बार दानव ने सुंदरी से शादी का प्रस्ताव रखा, परंतु उसने इंकार कर दिया। कुछ दिन बाद एक महीने के लिए सुंदरी अपने बीमार पिता को देखने गई। सुंदरी के जाने पर दानव बीमार हो गया। महल में आकर सुंदरी ने दानव को पौधों के बीच में लेटा देखा तो वह समझी दानव मर गया है। वह ज़ोर से रोने लगी और बोली कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ और शादी करना चाहती हूँ। यह सुनते ही दानव सुंदर राजकुमार में बदल गया। उसने बताया कि वह एक बुरी परी के शाप से पीड़ित था। तुमने मुझे इस रूप में पसंद करके शाप से मुक्त कर दिया है।

10. फूल और काँटा

कविता का प्रारंभ–सर्वप्रथम बच्चों को कविता सस्वर पढ़कर सुनाएँ। उनसे पूछें कि इस कविता से तुम्हें क्या समझ आया? फिर उन्हें बताएँ कि फूल और काँटा एक ही पौधे पर जन्म लेते हैं। एक ही परिस्थिति में पलते-बढ़ते हैं। परंतु दोनों के स्वभाव में अंतर होता है। इसी प्रकार मनुष्य के स्वभाव में भी अंतर होता है। सुंदर फूल सभी के मन को भाता है वहीं काँटा दूसरों को कष्ट देता है।

अभ्यास कार्य

कविता की बात

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) फूल और काँटे एक ही जगह पर पैदा होते हैं। एक-सी चाँदनी, एक-सी बरसात और एक-सी हवाएँ दोनों पर पड़ती हैं।

(ख) फूल तितलियों को गोद में लेकर भौरों को अपना रस पिलाते हैं जबकि काँटे तितलियों के पंख कुतर कर भौरों का भी शरीर वेध देते हैं।

(ग) फूल अपनी खुशबू और निराले रंगों से सबके मन को खुश कर देता है।

(घ) फूल को सभी लोग पसंद करते हैं, क्योंकि फूल देवताओं के सिर पर शोभा देता है।

2. इन पंक्तियों में कवि कहता है जिस प्रकार एक काँटा सबको पीड़ा देता है उसके कारण वह सबकी आँख में खटकता है। वहीं दूसरी ओर उसी वृक्ष पर खिलने वाला फूल देवताओं के शीश पर चढ़ाया जाता है। उसी तरह केवल अच्छे कुल में जन्म लेना ही काफ़ी नहीं होता। व्यक्ति को अच्छे कर्म भी करने पड़ते हैं तभी वह समाज में योग्य बनता है तथा सम्मान का पात्र बनता है।

भाषा की बात

1. चाँद – राकेश इंदु   आँख – नयन नेत्र

हवा – पवन समीर   रात – निशा रजनी

फूल – सुमन पुष्प

2. (क) सुर (देवता) – फूल **सुर** के शीश पर शोभा देता है।

सुर (स्वर, लय) – अनन्या बहुत **सुर** में गाना गाती है।

(ख) श्याम (काला) – श्रीकृष्ण **श्याम** वर्ण के थे।

श्याम (श्रीकृष्ण) – **श्याम** बहुत दयालु थे।

(ग) कुल (वंश) – मोहन क्षत्रिय **कुल** का है।

कुल (सब) – कक्षा में **कुल** तीस विद्यार्थी हैं।

3. **संज्ञा** – फूल, चाँद, तितली, काँटा

क्रिया – बहना, बरसना, चमकना, कुतरना

सोच-समझ की बात

- बच्चों को तरह-तरह के फूलों के नाम, रंग, गंध बनावट तथा उनके उपयोग के बारे में बताएँ कि फूल न केवल बगीचे की शोभा होते हैं वरन् उनसे तरह-तरह के रंग भी बनते हैं। उनकी खुशबू से साबुन, इत्र इत्यादि बनते हैं। फूलों से सजावट होती है तथा भगवान की पूजा-अर्चना की जाती है।

कुछ करने की बात

1. बच्चे स्वयं बगीचे का चित्र बनाएँ और उसे रंग-बिरंगे फूलों से सजाएँ।
2. रंग-बिरंगे प्यारे-प्यारे
   कितने सुंदर लगते फूल
   तितली आती, भौंरे आते
   सबको हँसकर गले लगाते।
   इन फूलों की शोभा न्यारी,
   सबको लगती प्यारी-प्यारी।
   (बच्चे अपनी कल्पना से भी लिख सकते हैं।)

इकाई-3 : सूझबूझ

11. सीढ़ीदार खेत

पाठ का प्रारंभ–बच्चों से पूछें कि क्या उन्होंने कभी सीढ़ीनुमा खेत देखे हैं? बताएँ–सीढ़ीदार खेत प्राय: पहाड़ी क्षेत्रों में होते हैं। भारत के पूर्वोत्तर प्रांत दार्जिलिंग में भी सीढ़ीदार खेत होते हैं। यहाँ पर चाय की खेती की जाती है। दार्जिलिंग की चाय विश्वभर में निर्यात की जाती है। आज हम इस पाठ के माध्यम से चाय की खेती के बारे में पढ़ेंगे।

अभ्यास कार्य

पाठ की बात

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
   (क) अमित के पापा डॉक्टर होने के कारण बहुत व्यस्त रहते थे, इसलिए वे उसे छुट्टियों में कहीं घुमाने नहीं ले जा पाते थे।
   (ख) अमित में अपूर्व उत्साह इसलिए झलक रहा था क्योंकि उसके पापा ने उसे दार्जिलिंग 'टूर' पर जाने की आज्ञा दे दी थी।
   (ग) चाय की खेती के लिए धूपदार मौसम और पर्याप्त बारिश की ज़रूरत होती है।
   (घ) चाय की पत्तियाँ बहुत नरम होती हैं, इसलिए महिलाएँ ही चाय की पत्तियों को तोड़ती हैं क्योंकि उनके हाथ बहुत कोमल होते हैं।

(ङ) चाय की खेती सीढ़ीदार या ढलानदार खेतों में इसलिए की जाती है, क्योंकि चाय के पौधों की जड़ों को ठहरे हुए पानी से बचाया जाता है और इस तरह के खेतों में पानी ठहरता नहीं है। आगे बहता ही जाता है।

(च) चाय की पत्तियाँ साल में तीन बार बरसात, गर्मी और शरद ऋतु में तोड़ी जाती हैं।

2. (क) अमित के पापा ने अमित से कहा।

(ख) अमित ने अपने पापा से कहा।

(ग) सर ने बच्चों से कहा।

(घ) शरद ने सर से कहा।

भाषा की बात

1. (क) अमित ने सोचा **कि** बात करने का यही उचित समय है।

(ख) अमित का चेहरा फूल-सा खिल रहा था **क्योंकि** अगले दिन सुबह ही उसे बस से जाना था।

(ग) ठंडी हवा **और** चमचमाती धूप में बच्चे खूब आनंद ले रहे थे।

(घ) पिछले साल अमित के सर टूर लेकर काजीरंगा गए थे **लेकिन** अमित नहीं जा पाया था।

2.

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
महिला	पुरुष	सेठ	सेठानी
लड़की	लड़का	युवक	युवती
मालिन	माली	सम्राट	सम्राज्ञी
अभिनेत्री	अभिनेता	विद्वान	विदुषी
कवयित्री	कवि	बादशाह	बेगम

3.

ट्ट –	छुट्टी	मिट्टी	पट्टी
म्म –	सम्मान	अम्मा	चम्मच
च्च –	बच्चा	सच्चा	कच्चा
त्त –	छत्ता	पत्ता	कुत्ता
ब्ब –	गुब्बारा	छब्बीस	मुरब्बा

4.

विशेषण	**विशेष्य**
सीढ़ीदार	कपड़े
चमचमाती	मैदान
ऊनी	खेत
समतल	पत्तियाँ
ठंडी	धूप
सूखी	हवा

5. (क) हरे-भरे – हमने कल **हरे-भरे** मैदान देखे।

   (ख) अपने-अपने – सभी बच्चे **अपने-अपने** घर चले गए।

6. (क) **मुझे** एक कार खरीदनी है।

   (ख) उसने एक चित्र **बनाया** है।

   (ग) **वह** कल से बीमार है।

   (घ) **मेरी** पुस्तक खो गई।

   (ङ) बीमार व्यक्ति **सोता** है।

सोच-समझ की बात

- यदि हम जून में केरल जा रहे हैं तो हम अपने साथ छाता, बरसाती आदि ले जाएँगे क्योंकि वहाँ इन दिनों बहुत बारिश होती है।

कुछ करने की बात

अक्षत
310, कमला नगर
दिल्ली
8-10-10
प्रिय अमन
मधुर स्मृतियाँ,
कल ही तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर खुशी हुई। मैं अभी कुछ दिन पहले अपने माता-पिता के साथ ऐलीफेंटा की गुफाएँ देखने गया था। इस पत्र के माध्यम से मैं तुम्हें ऐलीफेंटा की गुफाओं के बारे में बता रहा हूँ। सचमुच ऐलीफेंटा की गुफाएँ शिल्पकला का अद्भुत उदाहरण हैं। ये गुफाएँ मुंबई, हार्बर में एक द्वीप पर स्थित हैं। इन गुफाओं में गुप्तकाल की कला स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है जहाँ शिव की विलक्षण प्रतिमाएँ हैं। इन गुफाओं के मंदिर परिसर को शिव के निवास के रूप में ही पहचाना जाता है। शेष बातें मिलने पर बताऊँगा।
आदरणीय आंटी, अंकल को प्रणाम कहना।
तुम्हारा मित्र
अक्षत

* पेड़ क्या हैं

यह कविता पढ़कर आनंद लेने के लिए है। इसमें पेड़ों की उपयोगिता के बारे में बताया गया है। पेड़ हमारे सहायक होते हैं। ये हमें रोटी, सब्ज़ी और फल देते हैं। इसकी लकड़ियों से नाव बनाई जाती है। ये मिट्टी के कटाव को रोकते हैं। थके हुए यात्री पेड़ों के नीचे आराम करते हैं। हमें पेड़ों को हर हालत में कटने से रोकना होगा तथा अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे।

12. मियाँ गुमसुम और बत्तोरानी

पाठ का प्रारंभ–बच्चों को बताएँ कि इस पाठ में दो पात्र हैं–मियाँ गुमसुम और बत्तोरानी। बत्तोरानी बहुत बोलती हैं और मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करती हैं। वहीं मियाँ गुमसुम कम बोलते हैं और बुद्धि का प्रयोग भी कम करते हैं। आज हम दोनों की नोंक-झोंक वाला एक मज़ेदार पाठ पढ़ेंगे।

अभ्यास कार्य

पाठ की बात

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) इस पाठ में बत्तोरानी मुहावरों की भाषा में बात करती हैं।

(ख) मुहावरों में जब बात कही जाती है तो उसका अर्थ कही गई बात से अलग होता है जिससे उस बात का गहरा असर पड़ता है।

(ग) भालू को देखकर दीपू साँस रोककर ज़मीन पर लेट गया। भालू दीपू के पास आया, उसे सूँघा और उसे मरा हुआ जानकर चला गया।

भाषा की बात

1. पात्र
   - बरतन – मेरा जल-**पात्र** मेज़ पर रखा है।
   - अभिनय करनेवाला – इस नाटक में राजा का **पात्र** मेरा भाई कर रहा है।

   बाल
   - सिर आदि के बाल – मेरी बहन के **बाल** काले हैं।
   - बालक – यह **बाल** नाटक है।

   पता
   - किसी वस्तु, काम आदि का परिचायक – मुझे अपने घर का **पता** बताइए।
   - जानकारी – पुलिस को अपराधी का **पता** नहीं चला।

2. बे + लगाम = बेलगाम　　　बे + बस = बेबस
   बे + जान = बेजान　　　बे + दाग = बेदाग
   बे + वज़ह = बेवज़ह　　　बे + समझ = बेसमझ

3. (क) भालू को देखकर दीपू को **साँप सूँघ गया।**
   (ख) सोनाली सदैव पूनम के काम में **बाल की खाल निकालती** है।

4. सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाना – साँप सूँघ जाना।

5. **अनुस्वार (ं)** – कंजूसी, चंगी, बंद, चौंकना

अनुनासिक (ँ) – साँप, गाँव, ऊँचा, चौंकना, मियाँ

6.

गाँव × शहर	गहरा × उथला
महीन × मोटा	कठिन × सरल
सवाल × जवाब	ज़मीन × आसमान

7. बातूनी = ब् + आ + त् + ऊ + न् + ई

घोड़ी = घ् + ओ + ड़् + ई

कठिन = क् + अ + ठ् + इ + न् + अ

गुमसुम = ग् + उ + म् + अ + स् + उ + म् + अ

मुहावरा = म् + उ + ह् + आ + व् + अ + र् + आ

सोच-समझ की बात

छाँव – अरी धूप! आजकल तो तुम ईद का चाँद हो गई हो।

धूप – क्या करूँ! बादलों ने मुझे अपनी ओट में ले लिया है। मैं तो उससे आँख मिचौली का खेल खेलते-खेलते तंग आ गई हूँ।

छाँव – लोग तुम्हें देखने के लिए आँखें बिछाए बैठे हैं।

धूप – (हँसकर) पर जब मैं आती हूँ तब तो तुम सब मुझसे पीछा छुड़ाना चाहते हो और मुझे बुरा-भला कहते हो।

छाँव – नहीं, नहीं ऐसी बात नहीं है। मीन मेख निकालना तो मनुष्य का स्वभाव है। परंतु तुम्हारे बिना सब अधूरा है।

(बच्चे इसी प्रकार संवाद को आगे बढ़ाएँ।)

कुछ करने की बात

चिराग तले अँधेरा	पेट में चूहे कूदना
चार चाँद लगाना	आग में घी डालना

13. न्यायमंत्री

पाठ का प्रारंभ–बच्चों को बताएँ कि यह कहानी सम्राट अशोक के जीवन से संबंधित है। जानते हो सम्राट अशोक बहुत न्यायप्रिय थे। उन्होंने प्रजा की भलाई के लिए अनेक कार्य किए। वे प्रायः वेश बदलकर लोगों के दुख-दर्द को जानने के लिए निकल पड़ते थे। एक बार वे ऐसे व्यक्ति से मिले जो राज्य में हो रहे अन्याय से दुखी था और उसे दूर करने का अवसर पाना चाहता था। आओ, पाठ पढ़कर जानें कि उसे यह अवसर कैसे मिला?

अभ्यास कार्य

पाठ की बात

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) शिशुपाल अतिथि को भीतर लेकर गए और उनका आदर-सत्कार किया। यह देखकर परदेशी मुग्ध हो गया।

(ख) शिशुपाल के यह कहने पर कि आजकल बड़ा अन्याय हो रहा है, परदेशी इस बात से सहमत न हुआ।

(ग) सिपाहियों को देखकर शिशुपाल इसलिए डर गए उन्हें लगा कि कहीं उस परदेशी ने सम्राट से झूठी शिकायत तो नहीं कर दी।

(घ) सम्राट शिशुपाल को न्यायमंत्री बनाकर अवसर देना चाहते थे। क्योंकि शिशुपाल ने कहा था कि यदि मुझे अवसर दिया जाए तो मैं न्याय का डंका बजा दूँगा।

(ङ) अपराधी का पता चलने पर शिशुपाल इसलिए भौंचक्के रह गए क्योंकि स्वयं सम्राट ने ही पहरेदार की हत्या की थी।

(च) न्यायमंत्री ने कहा कि अपराधी और कोई नहीं, स्वयं सम्राट हैं। अतएव मैं आज्ञा देता हूँ कि सम्राट को चेतावनी देकर छोड़ दिया जाए और उनके स्थान पर अशोक की इस मूर्ति को फाँसी पर लटका दिया जाए।

2. (क) सम्राट ने अपने हाथ से राजमुद्रा उतारकर किसे पहनाई?

(ख) सम्राट ने शिशुपाल को अपराधी का पता लगाने के लिए कितना सप्ताह माँगा?

(ग) पहरेदार की हत्या किसने की थी?

भाषा की बात

1. (क) मालिक ने नौकर को **बाहर** निकाल दिया।
वसंत ऋतु आते ही बगीचे में **बहार** आ गई।

(ख) **सहसा** मेरे पास एक गाड़ी आकर रुकी।
मुसीबत के समय **साहस** रखना चाहिए।

(ग) **दिन** निकलते ही चिड़ियाँ चहकने लगीं।
हमें **दीन**-दुखियों पर दया करनी चाहिए।

2. (क) अतिथि को लेकर शिशुपाल घर के भीतर गए **और** उनका आदर-सत्कार किया।

(ख) मैं पढ़ना चाहता था, **परंतु** मेरे पास पुस्तक नहीं थी।

(ग) हम बस द्वारा मनाली घूमने गए **और** खूब मज़े किए।

3. (क) तुम अपराधी हो, तुम्हें मृत्युदंड दिया जाएगा।

(ख) मैंने आपको अवसर दिया था।

(ग) चारों ओर अंधकार फैल रहा है।

4. **'सु' के योग से** **'उप' के योग से**

सु + प्रबंध = सुप्रबंध	उप + स्थित = उपस्थित
सु + गंध = सुगंध	उप + चार = उपचार
सु + अवसर = सुअवसर	उप + वन = उपवन
सु + बोध = सुबोध	उप + कार = उपकार

5. हाथ में – हाथों में; घर के – घरों के; चरण से – चरणों से
   बात – बातें; रात – रातें; आँख – आँखें

6. (क) राजाओं का राजा – सम्राट (ख) जो पहरा देता हो – पहरेदार
   (ग) सात दिनों का समूह – सप्ताह (घ) जो प्रशंसा के योग्य हो – प्रशंसनीय
   (ङ) जो अपराध करता है – अपराधी (च) जिसके आने की तिथि न हो – अतिथि

7. (क) डंका बजना (प्रभाव होना) – अमेरिका में प्रभावशाली भाषण से स्वामी विवेकानंद का **डंका बज गया।**
   (ख) कलेजा धड़कना (डर के मारे काँप जाना) – अपने सामने शेर को देखते ही विशाल का **कलेजा धड़कने लगा।**
   (ग) नींद उड़ जाना (चिंता होना) – परीक्षा परिणाम के बारे में सोचकर नेहा की **नींद उड़ गई** है।
   (घ) रात-दिन एक करना (बहुत मेहनत करना) – परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए अक्षिता ने **रात-दिन एक कर दिया।**

सोच-समझ की बात

- बच्चों को सम्राट चंद्रगुप्त, छत्रपति शिवाजी के बारे में बताएँ तथा उनसे न्यायप्रिय राजाओं की कहानियाँ पढ़वाएँ और कक्षा में सुनाने को कहें।

कुछ करने की बात

1. छत्रपति शिवाजी एक निडर चतुर व नीतिवान शासक थे।
2. वे सदैव सभी धर्मों और वर्गों के पूजा-स्थलों का सम्मान करते थे।
3. वे हमेशा अपनी प्रजा से घुलते-मिलते और उनके सुख-दुख का ध्यान रखते थे।
4. शिवाजी एक कर्तव्यपरायण एवं कर्मठ योद्‌धा थे।
5. शिवाजी बहुत दयालु थे।

14. दोहे

पाठ का प्रारंभ–बताएँ इस पाठ में कुछ प्रेरणादायी दोहे दिए गए हैं। इनमें परिश्रम का महत्व, वाणी का महत्व, परोपकार का महत्व, अभ्यास का महत्व तथा आलस्य का त्याग आदि के गुणों के बारे में

बताया गया है। पूछें—क्या आप बिना मेहनत किए उत्तीर्ण हो सकते हैं? कड़वे बोल बोलने से क्या होता है? मीठी बोली बोलने से क्या लाभ है? अधिक बोलने और बिलकुल न बोलने में क्या अंतर है?

दोहों का सरलार्थ

1. जिस प्रकार पंखे को बिना हिलाए (हाथ का पंखा) हवा नहीं मिलती, उसी प्रकार बिना मेहनत के विद्या प्राप्त नहीं होती।
2. बहुत अधिक बोलना और बिलकुल चुप रहना दोनों ही ठीक नहीं होते। बहुत अधिक पानी का बरसना और बहुत तेज़ धूप भी अच्छी नहीं लगती। कहने का तात्पर्य यह है कि सभी चीज़ें सही अनुपात में ही ठीक होती हैं।
3. पेड़ अपने फल स्वयं नहीं खाते। नदी अपना पानी स्वयं नहीं पीती। इसी प्रकार सज्जन लोग दूसरों की भलाई के लिए संपत्ति का संग्रह करते हैं।
4. बोली अनमोल होती है। हमें जब भी बोलना हो, सोच-समझकर ही बोलना चाहिए। क्योंकि कड़वे बोल हृदय में तीर की तरह चुभते हैं। अतः हमें नाप-तोल कर ही बोलना चाहिए।
5. जो लोग अच्छे स्वभाव के होते हैं उन पर बुरे स्वभाव वाले लोगों का कोई असर नहीं होता। वे सदैव अच्छे ही कार्य करते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे चंदन के पेड़ पर ज़हरीले साँप दिन-रात लिपटे रहते हैं परंतु वह अपनी सुगंध अर्थात् खुशबू देना नहीं छोड़ता।
6. समय बहुत अनमोल होता है। इसे व्यर्थ नहीं करना चाहिए। आज का काम आज ही करना बेहतर है, उसे कल पर नहीं टालना चाहिए। क्योंकि पल भर में क्या होगा, कुछ नहीं पता? अर्थात् पल भर में यदि कोई विपत्ति आ जाए तो सारा कार्य अधूरा रह जाएगा।
7. लगातार अभ्यास करने से मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन जाता है। जैसे—रस्सी के बार-बार आने-जाने से पत्थर पर भी निशान पड़ जाते हैं।

अभ्यास कार्य

पाठ की बात

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) विद्या धन मेहनत करके प्राप्त किया जा सकता है।

(ख) बोलते समय सोच-समझकर तथा नाप-तोल के बोलना चाहिए।

(ग) करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर परत निसान।

(घ) आज का काम कल पर इसलिए नहीं छोड़ना चाहिए क्योंकि पलभर में यदि विपत्ति आ जाए तो सारा कार्य अधूरा रह जाएगा।

2. (क) सज्जन लोग दूसरों की भलाई के लिए संपत्ति का संग्रह करते हैं।

(ख) बहुत अधिक बोलना और बिलकुल चुप रहना दोनों ही ठीक नहीं होते। अर्थात् सभी चीज़ें सही अनुपात में ही ठीक होती हैं।

(ग) बोली अनमोल होती है। इसलिए हमें सोच-समझकर और नाप-तोल कर ही मुख से बाहर निकालना चाहिए।

भाषा की बात

1. वृक्ष – पेड़ तरु विटप भुजंग – सर्प साँप विषधर
   नदी – सरिता तटिनी सलिला शरीर – तन देह काया
2. सरीर – शरीर; पौन – पवन; अब्ब – अब
   परलै – प्रलय; रसरी – रस्सी; निसान – निशान
3. धूप × छाँव; उत्तम × अधम; विष × अमृत; कुसंग × सत्संग

सोच-समझ की बात

- बच्चों से पूछें कि उन्हें इन दोहों में से कौन-सा दोहा अच्छा लगा और क्यों? प्रयास करें कि बच्चे स्वयं निष्कर्ष निकाल सकें।

कुछ करने की बात

1. बच्चों को कबीर, रहीम और तुलसीदास के दोहे छाँटकर दें। बच्चे उन्हें सुंदर-सुंदर अक्षरों में चार्ट पर लिखें तथा उनसे प्राप्त सीख भी लिखें और कक्षा में टाँगें।
2. बच्चे दोहे याद करें और संगीत शिक्षिका की मदद से एक-एक दोहे को कक्षा में गाकर सुनाएँ।

15. अनु की डायरी के पन्ने

पाठ का प्रारंभ–बच्चों को बताएँ कि डायरी क्यों लिखी जाती है? कैसे लिखी जाती है? कहें–डायरी लिखना अच्छी आदत है। दिनभर में जो विशेष बातें होती हैं उन्हें डायरी में लिखा जाता है। डायरी लिखनेवाले की अपनी संपत्ति होती है। इसलिए हमें किसी की डायरी नहीं पढ़नी चाहिए।

पूछें–क्या कोई ऐसा काम है जो केवल लड़के कर सकते हैं और लड़कियाँ नहीं। कहें–लड़का और लड़की एक समान होते हैं। हमें दोनों में भेदभाव नहीं करना चाहिए।

अभ्यास कार्य

पाठ की बात

1. **नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**
   (क) रानी अनु के घर में काम करनेवाली आया सीमा की बेटी थी।
   (ख) रानी को खाना बनाना और घर के सभी काम करने पड़ते थे।
   (ग) रानी की माँ सोचती थी कि लड़की तो पराया धन होती है। उसे पढ़ाने से कोई फ़ायदा नहीं है। दूसरे शादी करके चली जाएगी। इसके अलावा रानी यदि स्कूल चली जाएगी तो उसके साथ काम कौन कराएगा। इसलिए रानी की माँ उसे स्कूल नहीं भेजना चाहती थी।

(घ) बच्चों को शिक्षा का अधिकार, खेलने का अधिकार और अपनी मर्ज़ी के काम करने के अधिकार मिलने चाहिए।

(ङ) पढ़ा-लिखा व्यक्ति ही जीवन में सफल होता है। वह अपना हिसाब-किताब स्वयं लगा सकता है। उसे किसी के ऊपर निर्भर नहीं रहना पड़ता। उसे कोई धोखा नहीं दे सकता तथा वह समाज में सम्मान का पात्र होता है।

(च) आज के समय में लड़कियाँ सभी काम कर सकती हैं। हिमालय हो या अंतरिक्ष उसके कदम सभी जगह पहुँच गए हैं। वह एक कुशल व्यापारी है तो एक सफल इंजीनियर भी। डॉक्टर होने के साथ-साथ वह मंत्री पद को बखूबी सँभाल रही है।

भाषा की बात

1. (क) माँ ने मेरी **उदासी** का कारण पूछा।

(ख) रानी की आँखें फिर **चमक** उठी थीं।

(ग) हम इसकी पढ़ाई का पूरा खर्चा **उठाएँगे**।

(घ) मेरी आँखें रानी को **ढूँढ़ने** लगीं।

(ङ) मैं आज निश्चिंत होकर **सो** सकूँगी।

2.

शब्द	**संज्ञा-भेद**	**शब्द**	**संज्ञा भेद**
देश	जातिवाचक संज्ञा	घर	जातिवाचक संज्ञा
पढ़ाई	भाववाचक संज्ञा	खुशी	भाववाचक संज्ञा
लड़की	जातिवाचक संज्ञा	राष्ट्रपति	जातिवाचक संज्ञा
मदर टेरेसा	व्यक्तिवाचक संज्ञा	इंदिरा गांधी	व्यक्तिवाचक संज्ञा

3.

धन – धनी	धनवान	निर्धन	आशा – निराशा	आशावादी	आशावान
डर – निडर	डरपोक	डरावना	उत्साह – उत्साही	उत्साहित	निरुत्साह
देश – स्वदेश	विदेश	देशाटन			

4. (क) अचंभित, ज़मीन, निश्चिंत, प्रतीक्षा, रोशन

(ख) आशा, भेदभाव, शिक्षक, सर्वोच्च, होश

(ग) अजीब, उम्र, दरवाज़ा, महिला, बेसब्री

(घ) अधिकार, किताब, चमक, बचपन, शिक्षक

5. रंग + आई = रंगाई; चढ़ + आई = चढ़ाई; बुन + आई = बुनाई

लड़ + आई = लड़ाई; लिख + आई = लिखाई; कम + आई = कमाई

6.

वाक्य	**काल**
(क) माँ खाना बना रही है।	वर्तमान काल
(ख) आज वर्षा होगी।	भविष्यत् काल

(ग) कल हम आगरा गए थे।	भूतकाल
(घ) अदिति पढ़ रही है।	वर्तमान काल
(ङ) बच्चे खेल रहे थे।	भूतकाल
(च) पिताजी कल दिल्ली जाएँगे।	भविष्यत् काल

सोच-समझ की बात

1. हमारे देश में बहुत से ऐसे बच्चे हैं जो ऐसे आर्थिक एवं सामाजिक वातावरण में रहते हैं जो उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास में रुकावट पैदा करते हैं। परंतु आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि उन बच्चों की सभी ज़रूरतें पूरी की जाएँ और उनके भविष्य को उज्ज्वल तथा सशक्त बनाया जाए। इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यक है कि हर बच्चे को उसके आधारभूत अधिकार के रूप में शिक्षा प्रदान की जाए। आजकल सभी सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएँ वंचित वर्गों में जन्म लेने वाले बच्चों के जन्म प्रमाण-पत्र जारी करने में एकजुट हुए हैं ताकि उन्हें स्वास्थ्य और शिक्षा आदि की सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सके।
2. अगर रानी की माँ या उसकी तरह कोई महिला अपनी लड़की को लेकर मेरे सामने आए तो पहले मैं उसकी लड़की के साथ दोस्ती करती और यह जानने की कोशिश करती कि वह पढ़ाई क्यों नहीं करती है। उसके बताने पर कि पैसों की कमी के कारण उसकी माँ उसे पढ़ाना नहीं चाहती। मैं उसकी माँ को समझाती कि क्या वह चाहती है कि उसकी बेटी भी यही काम करे। यदि उसकी बेटी पढ़-लिख लेगी तो वह अपना भला-बुरा अच्छी तरह समझ पाएगी और दूसरों के द्वारा उसका शोषण भी नहीं होगा।

कुछ करने की बात

1. बच्चे अपने अनुभव के आधार पर स्वयं लिखें।
2. अपने घर के आस-पास के अनपढ़ लोगों की सूची बनाएँ। अपने समय से कुछ समय निकालकर उन्हें पढ़ाएँ।
3. इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, किरन बेदी, सरोजिनी नायडू, प्रतिभा पाटिल, मदर टेरेसा।

16. लालबहादुर शास्त्री

पाठ का सारांश–पाठ पढ़ाने से पूर्व बच्चों से पूछें कि 2 अक्तूबर को किसका जन्मदिन होता है? उन्हें बताएँ महात्मा गांधी के साथ-साथ लालबहादुर शास्त्री का भी जन्मदिन होता है। लालबहादुर शास्त्री भारत के दूसरे प्रधानमंत्री थे। पूछें कि वे लालबहादुर शास्त्री के बारे में क्या जानते हैं?

अभ्यास कार्य

पाठ की बात

1. नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) लालबहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्तूबर, 1904 को उत्तर प्रदेश के एक साधारण परिवार में हुआ था।

(ख) शास्त्रीजी को बाल्यकाल में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जब वे डेढ़ वर्ष के थे तब उनके पिता का देहांत हो गया। माँ जब शास्त्रीजी को लेकर नाना के घर पहुँची तो कुछ दिन बाद नाना भी चल बसे। इसके बाद शास्त्रीजी को अपने मामा-मामी के घर रहना पड़ा और वहाँ उन्हें घर में झाड़ू लगाना, कपड़े धोना आदि बहुत से काम करने पड़े।

(ग) शास्त्रीजी की माँ बहुत ही स्वाभिमानी तथा सरल स्वभाव की महिला थीं। स्वाभिमान के साथ-साथ उनमें सच्चाई तथा देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी थी।

(घ) एक दिन कक्षा में गुरुजी ने सब बच्चों से रैपिड रीडर लाने के लिए कहा। परंतु शास्त्रीजी के पास इतने पैसे नहीं थे कि वे किताब खरीद सकें। उन्होंने अपने मित्र से एक रात के लिए किताब उधार ली। जब घर पहुँचे तो लालटेन जलाने के लिए तेल नहीं था। उन्होंने स्ट्रीट लाइट के नीचे रात-भर बैठकर पूरी किताब की नकल उतार ली।

(ङ) शास्त्रीजी के व्यक्तित्व से हमें शिक्षा मिलती है कि जीवन में चाहें कितनी भी कठिनाइयाँ आएँ हमें उनसे घबराना नहीं चाहिए, बल्कि परिस्थितियों का मुकाबला डटकर करना चाहिए।

(च) शास्त्रीजी ने 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया था।

2. स्वाभिमानी देशभक्त त्यागी मेहनती
ईमानदार दृढ़ संकल्प दूरदर्शी

3. (क) यह बात लालबहादुर शास्त्री ने अपने दोस्त गोलू से कही। क्योंकि गुरुजी ने अगले दिन किताब लाने के लिए कहा था। परंतु शास्त्रीजी के पास किताब खरीदने के लिए पैसे नहीं थे।

(ख) बच्चे स्वयं अपने अनुभव से लिखें।

भाषा की बात

1.

लोभ → लालच
सम्मान → आदर
बाधा → रुकावट
सर्वोपरि → सबसे ऊपर
स्वतंत्र → आज़ाद

असाधारण → अनोखा
स्वार्थ → अपना मतलब
संग्राम → युद्ध
दृढ़ संकल्प → पक्का इरादा
संकोच → हिचक

2. भारत – भ् + आ + र् + अ + त् + अ
सदैव – स् + अ + द् + ऐ + व् + अ
किताब – क् + इ + त् + आ + ब् + अ
विपरीत – व् + इ + प् + अ + र् + ई + त् + अ
असहयोग – अ + स् + अ + ह् + अ + य् + ओ + ग् + अ

3. (क) जो दूर की सोचता हो – दूरदर्शी
(ख) जहाँ दो रास्ते मिलते हैं – दोराहा
(ग) जो साधारण न हो – असाधारण
(घ) जो इतिहास से संबंध रखता हो – ऐतिहासिक
(ङ) जो पहले कभी न हुआ हो – अभूतपूर्व
(च) साथ पढ़नेवाला – सहपाठी

4. बुराई – बुरा; अच्छाई – अच्छा; सरलता – सरल
लोभ – लोभी; परिश्रम – परिश्रमी; स्वतंत्रता – स्वतंत्र

5. **एक जैसे** – डरते-डरते, अपनी-अपनी, कूट-कूट
विपरीतार्थक – दिन-रात, सुख-दुख, देश-विदेश
मिलते-जुलते अर्थवाले – लाड़-प्यार, सोच-विचार, काम-काज

6. (क) साक्षी (भीतर) है।
(ख) वह (कम) खाता है।
(ग) (अचानक) एक आवाज़ आई।
(घ) कछुआ (धीरे-धीरे) चल रहा था।
(ङ) सब्ज़ीवाला (सुबह-सुबह) आता है।

7. (स्व) – स्वतंत्र स्वदेश स्वास्थ्य
(रु) – रुपया रुक रुचि
(श्र) – श्रम परिश्रम श्रमजीवी
(प्रति) – प्रतिदिन प्रतिकार प्रतिरोध
(त्व) – त्वचा व्यक्तित्व नेतृत्व

सोच-समझ की बात

1. बच्चों को मदर टेरेसा, बाबा आमटे के बारे में बताएँ। बाबा आमटे बचपन से ही गरीबों और दीन-दुखियों की सेवा करते थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन कुष्ठ रोगियों की सेवा में लगा दिया। उन्हें स्वावलंबी बनकर जीने की इच्छा जगाई।

2. मदर टेरेसा भी प्रेम की मूर्ति थीं। उनके हृदय में छोटे–बड़े सभी के लिए प्रेम था। उन्होंने गरीब, रोगी, असहाय और निम्न जाति के लोगों को प्यार और सम्मान दिया। अपने हाथों से उनकी सेवा की। उन्हें हँसकर जीवन जीना सिखाया।

कुछ करने की बात

1. बच्चे महामना मदनमोहन मालवीय या किसी अन्य के बारे में इंटरनेट से जानकारी प्राप्त करके लिखें।
2. बच्चे लालबहादुर शास्त्री के जीवन की कोई घटना लिखें। जैसे–एक बार जब लालबहादुर बहुत छोटे थे तो वे अपने दोस्तों के साथ नदी के पार मेला देखने गए। शाम को लौटते समय सभी दोस्त नदी के किनारे पहुँचे। सभी लड़कों ने तो नाव के किराये के पैसे दे दिए परंतु लालबहादुर ने जैसे ही जेब में हाथ डाला, उसमें एक पाई भी नहीं थी। उन्होंने अपने दोस्तों से कहा कि तुम लोग जाओ मैं अभी थोड़ी देर बाद आऊँगा। जब सभी दोस्त नाव में बैठकर चले गए तब उन्होंने अपने कपड़े उतारे और सिर में बाँधकर नदी में कूद गए। उस समय नदी में बाढ़ आई हुई थी और नदी पार करना खतरनाक था। वहाँ खड़े सभी मल्लाहों ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की पर वे नहीं रुके और तैरते हुए किनारे पहुँच गए।